



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1375]

No. 1375]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 7, 2007/कार्तिक 16, 1929

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 7, 2007/KARTIKA 16, 1929

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 नवम्बर, 2007

आय-कर

का.आ. 1896(अ).—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 17 की उप-धारा (2) के साथ पठित धारा 295 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आय-कर नियम, 1962 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात् :—

1. इन नियमों का संक्षिप्त नाम आय-कर (चौदहवां संशोधन) नियम, 2007 है।

2. आय-कर नियम, 1962 के नियम 3 में, :—

(i) उपनियम (1) में, सारणी 1 के स्थान पर निम्नलिखित सारणी रखी जाएगी और उसको 1 अप्रैल, 2006 से रखा गया समझा जाएगा, अर्थात् :—

“सारणी I”

क्रम सं.	परिस्थितियां	जहां आवास सुसम्भित नहीं है	जहां आवास सुसम्भित है
(1)	(2)	(3)	(4)
(1)	जहां आवास केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा अपने ऐसे कर्मचारियों को, जो संघ या ऐसे राज्य के क्रियाकलापों के संबंध में अधिकार पद या पद धारण किए हुए हैं अथवा ऐसी सरकार के नियंत्रणाधीन किसी निकाय या उपक्रम में प्रतिनियुक्ति पर सेवा कर रहे हैं, दिया जाता है।	उक्त आवास की आवत्त केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा ऐसी सरकार द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार कर्मचारी द्वारा वास्तव में संदत्त किए जाएं कर निर्धारित अनुज्ञित फीस।	स्तम्भ (3) के अधीन यथा अवधारित परिलिंबियों का मूल्य तथा उसमें फर्नीचर (जिसके अंतर्गत टेलीविजन सैट, रेडियो सैट, रेफ्रीजरेटर, अन्य घरेलू साधित्र, बातानुकूलन संयंत्र या उपस्कर हैं) की लागत का 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष जोड़ दिया जाएगा या यदि ऐसा फर्नीचर किसी तीसरे पक्षकार से किए जाएं पर लिया जाया है तो उस सामान के लिए संदेय वास्तविक किए गए प्रभार और उनमें से पूर्व वर्ष के दौरान कर्मचारी द्वारा उसके लिए संदत्त या संदेय किन्हीं प्रभारों को घटा दिया जाएगा।

	<p>(2) जहां आवास किसी अन्य नियोजक द्वारा दिया जाता है और— (क) जहां आवास नियोजक के स्वामित्व में है, या ।</p>	<p>उस अवधि की बाबत जिसके दौरान उक्त आवास का अधिभोग कर्मचारी के पास था और यदि उक्त पूर्ववर्ष के दौरान कर्मचारी द्वारा वस्तुतः किराए का कोई संदाय किया गया है तो उस किराए को घटाकर—</p> <p>(i) ऐसे शहरों में जिनकी जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 25 लाख से अधिक है, वेतन का 15 प्रतिशत ;</p> <p>(ii) ऐसे शहरों में जिनकी जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 10 लाख से अधिक है, किन्तु 25 लाख से अधिक नहीं है, वेतन का 10 प्रतिशत ;</p> <p>(iii) अन्य शहरों में वेतन का 7.5 प्रतिशत ।</p>	<p>स्तंभ (3) के अधीन यथा अवधारित परिलक्षियों का मूल्य तथा उसमें फर्नीचर (जिसके अंतर्गत टेलीविजन सैट, रेडियो सैट, रेफ्रीजरेटर, अन्य घरेलू साधित्र, वातानुकूलन संयंत्र या उपस्कर या ऐसे ही अन्य साधित्र या जुगत है) की लागत का 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष जोड़ दिया जाएगा या यदि ऐसा फर्नीचर किसी तीसरे पक्षकार से किराए पर लिया गया है तो उस सामान के लिए संदेय वास्तविक किराया प्रभार और उनमें से पूर्ववर्ष के दौरान कर्मचारी द्वारा उसके लिए संदत्त या संदेय किन्हीं प्रभारों को घटा दिया जाएगा ।</p>
	<p>(ख) जहां आवास नियोजक द्वारा पट्टे या किराए पर लिया जाता है ।</p>	<p>नियोजक द्वारा संदत्त या संदेय पट्टे के किराए की वास्तविक रकम या वेतन का 15 प्रतिशत, जो भी कम हो और उसमें से ऐसा किराया, यदि कोई हो, घटा दिया जाएगा जिसका उक्त कर्मचारी द्वारा वस्तुतः संदाय किया गया है ।</p>	<p>स्तंभ (3) के अधीन यथा अवधारित परिलक्षियों का मूल्य तथा उसमें फर्नीचर (जिसके अंतर्गत टेलीविजन सैट, रेडियो सैट, रेफ्रीजरेटर, अन्य घरेलू साधित्र, वातानुकूलन संयंत्र या उपस्कर या ऐसे ही अन्य साधित्र या जुगत है) की लागत का 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष जोड़ दिया जाएगा या यदि ऐसा फर्नीचर किसी तीसरे पक्षकार से किराए पर लिया गया है तो उस सामान के लिए संदेय वास्तविक किराया प्रभार और उनमें से पूर्ववर्ष के दौरान कर्मचारी द्वारा उसके लिए संदत्त या संदेय किन्हीं प्रभारों को घटा दिया जाएगा ।</p>
<p>(3)</p>	<p>जहां आवास ऊपर क्रम सं० (1) या (2) में विनिर्दिष्ट नियोजक द्वारा किसी होटल में उपलब्ध कराया जाता है (सिवाय वहां के</p>	<p>लागू नहीं होता ।</p>	<p>पूर्ववर्ष के लिए संदत्त या संदेय वेतन का 24 प्रतिशत या उस अवधि के लिए जिसके दौरान ऐसा आवास उपलब्ध कराया जाता है,</p>

	जहां कर्मचारी को ऐसा आवास उसके एक स्थान से किसी अन्य स्थान को स्थानांतरण पर कुल मिलाकर 15 दिन से अधिक की अवधि के लिए उपलब्ध कराया जाता है)		ऐसे होटल को संदत्त या संदेय वास्तविक प्रभार जो भी कम हो तथा उसमें से ऐसा किराया, यदि कोई हो, जो कर्मचारी द्वारा वस्तुतः संदत्त किया जा चुका है या संदेय है, घटा दिया जाएगा।
--	--	--	---

(ii) उपनियम (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपनियम अंतःस्थापित किया जाएगा और उसको 1 अप्रैल, 2008 से

अंतःस्थापित किया गया समझा जाएगा, अर्थात् :—

“(2) (अ) किसी नियोजक द्वारा, जो अधिनियम के अध्याय XII-ज के अधीन सीमांत फायदे कर संदाय करने के लिए दायी नहीं है, किसी कर्मचारी को मोटर कार के उपयोग के रूप में दी गई परिलक्षि के मूल्य का निर्धारण नीचे सारणी के अनुसार किया जाएगा, अर्थात् :—

सारणी II

प्रति कैलेण्डर मास परिलक्षि का मूल्य

क्र.सं.	परिस्थितियां	जहां इंजन की क्यूबिक क्षमता 1.6 लीटर से अधिक नहीं है	जहां इंजन की क्यूबिक क्षमता 1.6 लीटर से अधिक है
(1)	(2)	(3)	(4)
(1)	जहां मोटर कार नियोजक के स्वामित्व में है या उसके द्वारा किराए पर ली जाती है और—		
	(क) वह उसके पदीय कर्तव्यों के पालन में पूर्णतः और अनन्य रूप से उपयोग की जाती है ;	कोई मूल्य नहीं ; परंतु नियोजक द्वारा इस उपनियम के खंड (आ) में विनिर्दिष्ट दस्तावेज रखे जाते हों ।	कोई मूल्य नहीं ; परंतु नियोजक द्वारा इस उपनियम के खंड (आ) में विनिर्दिष्ट दस्तावेज रखे जाते हों ।
	(ख) वह कर्मचारी या उसके घर के किसी सदस्य के प्राइवेट या निजी प्रयोजनों के लिए अनन्य रूप से उपयोग की जाती है और उसके अनुस्थान व्यय नियोजक द्वारा वहन किए जाते हैं या उनकी प्रतिपूर्ति की जाती है ;	सुसंगत पूर्ववर्ष के दौरान मोटर कार के प्रचालन और अनुस्थान पर नियोजक द्वारा उपगत व्यय की वास्तविक रकम जिसके अंतर्गत नियोजक द्वारा चालक को संदत्त पारिश्रमिक, यदि कोई हो, भी है और उसमें मोटर कार की सामान्य दूटफूट के मद्द रकम जोड़ दी जाएगी तथा उसमें ऐसे उपयोग के लिए कर्मचारी से प्रभारित कोई रकम घटा दी जाएगी ।	सुसंगत पूर्ववर्ष के दौरान मोटर कार के प्रचालन और अनुस्थान पर नियोजक द्वारा उपगत व्यय की वास्तविक रकम जिसके अंतर्गत नियोजक द्वारा चालक को संदत्त पारिश्रमिक, यदि कोई हो, भी है और उसमें मोटर कार की सामान्य दूटफूट के मद्द रकम जोड़ दी जाएगी तथा उसमें ऐसे उपयोग के लिए कर्मचारी से प्रभारित कोई रकम घटा दी जाएगी ।

		जाएगी ।	
	(ग) वह उसके स्वयं के या उसके घर के किसी सदस्य के भागतः पदीय कर्तव्यों के पालन में और भागतः प्राइवेट या निजी प्रयोजनों के लिए उपयोग की जाती है और		
	(i) उसके परिचालन और अनुस्करण पर व्यय नियोजक द्वारा वहन किए जाते हैं या उनकी प्रतिपूर्ति की जाती है ।	1,200 रुपए (जमा 600 रुपए, यदि मोटर कार को चलाने के लिए चालक भी उपलब्ध कराया जाता है)	1,600 रुपए (जमा 600 रुपए, यदि मोटर कार को चलाने के लिए चालक भी उपलब्ध कराया जाता है)
	(ii) ऐसे प्राइवेट या निजी उपयोग के लिए परिचालन और अनुस्करण पर व्यय निर्धारिती द्वारा पूरे वहन किए जाते हैं ।	400 रुपए (जमा 600 रुपए, यदि मोटर कार को चलाने के लिए चालक भी उपलब्ध कराया जाता है)	600 रुपए (जमा 600 रुपए, यदि मोटर कार को चलाने के लिए चालक भी उपलब्ध कराया जाता है)
(2)	जहां कर्मचारी की स्वयं की मोटर कार है किन्तु उसके वास्तविक परिचालन और अनुस्करण प्रभार (जिनके अंतर्गत चालक का, यदि कोई हो, पारिश्रमिक भी है) नियोजक द्वारा वहन किए जाते हैं या उसको प्रतिपूर्ति की जाती है और		
	(i) ऐसी प्रतिपूर्ति उक्त यान के पूर्णतः और अनन्यतः पदीय प्रयोजन के लिए उपयोग के लिए है ।	कोई मूल्य नहीं : परंतु नियोजक द्वारा इस उपनियम के खंड (आ) में विनिर्दिष्ट दस्तावेज रखे जाते हैं ।	कोई मूल्य नहीं : परंतु नियोजक द्वारा इस उपनियम के खंड (आ) में विनिर्दिष्ट दस्तावेज रखे जाते हों ।
	(ii) ऐसी प्रतिपूर्ति उक्त यान के भागतः पदीय प्रयोजन के लिए और भागतः उक्त कर्मचारी या उसके घर के किसी सदस्य के निजी या प्राइवेट प्रयोजनों के लिए उपयोग के लिए है ।	इस उपनियम के खंड (आ), में अंतर्विष्ट उपबंधों के अधीन रहते हुए, नियोजक द्वारा उपगत व्यय की वास्तविक रकम, उसमें से ऊपर स्तंभ (1)(ग)(i) में विनिर्दिष्ट रकम घटा दी जाएगी ।	इस उपनियम के खंड (आ), में अंतर्विष्ट उपबंधों के अधीन रहते हुए, नियोजक द्वारा उपगत व्यय की वास्तविक रकम, उसमें से ऊपर स्तंभ (1)(ग)(i) में विनिर्दिष्ट रकम घटा दी जाएगी ।
(3)	जहां कर्मचारी के पास कोई अन्य स्वचालित वाहन है किन्तु वास्तविक परिचालन और अनुस्करण प्रभार नियोजक द्वारा वहन किए जाते हैं या उसको		

	प्रतिपूर्ति की जाती है और		
	(i) ऐसी प्रतिपूर्ति उक्त यान के पूर्णतः और अनन्यतः पदीय प्रयोजन के लिए उपयोग के लिए है।	कोई मूल्य नहीं : परंतु नियोजक द्वारा इस उपनियम के खंड (आ) में विनिर्दिष्ट दस्तावेज रखे जाते हैं।	लागू नहीं होता।
	(ii) ऐसी प्रतिपूर्ति उक्त यान के भागतः पदीय प्रयोजन के लिए और भागतः उक्त कर्मचारी के निजी या प्राइवेट प्रयोजनों के लिए उपयोग के लिए है।	इस उपनियम के खंड (आ), में अंतर्विष्ट उपबंधों के अधीन रहते हुए, नियोजक द्वारा उपगत व्यय की वास्तविक रकम, उसमें से 600 रु० की रकम घटा दी जाएगी :	

परंतु जहां नियोजक के स्वामित्व में एक या अधिक मोटर कारें हैं या उसके द्वारा किराए पर ली जाती हैं और कर्मचारी या उसके घर के किसी सक्ष्य को ऐसी मोटरकार या ऐसी सभी मोटर कारों या उनमें से किसी का उपयोग (पूर्णतः या अनन्यतः उसके कर्तव्यों के पालन में उपयोग से भिन्न) करने के लिए अनुज्ञात किया जाता है वहां परिलक्षि का मूल्य सारणी II के क्रम सं० (1)(ग)(i) के अनुसार एक कार की बाबत संगणित रकम होगी मानो कर्मचारी के लिए एक मोटर कार भागतः उसके कर्तव्यों के पालन के लिए और भागतः उसके प्राइवेट या निजी प्रयोजनों के लिए उपयोग के लिए उपलब्ध कराई गई है और अन्य कार या कारों की बाबत परिलक्षि का मूल्य सारणी II के क्रम सं० (1)(ख) के अनुसार संगणित रकम होगी मानो उसे ऐसी कार या कारें उसके प्राइवेट या निजी प्रयोजनों के लिए अनन्यतः उपलब्ध कराई गई थी।

(आ) जहां नियोजक या कर्मचारी यह दावा करता है कि मोटर कार का उपयोग पूर्णतः या अनन्यतः पदीय कर्तव्यों के पालन में किया जाता है या कर्मचारी के स्वामित्वधीन मोटर कार के पदीय प्रयोजनों के लिए परिचालन और अनुरक्षण पर वास्तविक उपरोक्त सारणी II के क्रम सं० 2(ii) या 3(ii) में कठोरी योग्य रकमों से अधिक है तो वह ऐसे पदीय उपयोग के कारण उच्चतर रकम का दावा कर सकेगा और ऐसे मामले में परिलक्षि का मूल्य नियोजन द्वारा वहन किए गए या उसके द्वारा प्रतिपूर्ति किए गए प्रभारों की वास्तविक रकम होगी और उसमें से उक्त यान के पदीय उपयोग के कारण ऐसी उच्चतर रकम घटा दी जाएगी परंतु वह भी तब जब निम्नलिखित शर्त पूरी कर दी जाती है:—

(क) नियोजक ने पदीय प्रयोजन के लिए की गई यात्राओं के पूरे ब्यौरे रखे हैं जिनके अंतर्गत यात्रा की तारीख, गंतव्य स्थान, मील और उस पर उपगत व्यय की रकम भी है;

(ख) कर्मचारी यह प्रमाणपत्र देता है कि उक्त व्यय पूर्णतः और अनन्यतः उसके पदीय कर्तव्य के पालन के लिए उपगत हुआ था।

स्पष्टीकरण—इस उपनियम के प्रयोजनों के लिए, मोटर कार की सामान्य टूट-फूट उक्त मोटर कार या कारों की वास्तविक लागत के 10 प्रतिशत वार्षिक पर निकाली जाएगी ।”

(iii) उपनियम (5) के पश्चात्, निम्नलिखित उपनियम, 1 अप्रैल, 2008 से अंतःस्थापित किया गया समझा जाएगा, अर्थात्:—

“(6) किसी ऐसे नियोजक द्वारा, जो आय-कर अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर का दायी नहीं है, जो यात्रियों या माल के लाने ले जाने के काम में लाग हुआ है, किसी कर्मचारी या उसके घर के किसी सदस्य को निजी या प्राइवेट निःशुल्क यात्रा या रियायती किराए पर यात्रा के लिए यात्रियों या माल के परिवहन के प्रयोजनार्थ ऐसे नियोजक के स्वामित्वाधीन किसी वाहन में, उसके द्वारा पट्टे पर लिए गए या किसी अन्य व्यवस्था द्वारा उपलब्ध कराए गए वाहन में लाने ले जाने की व्यवस्था के परिणामस्वरूप कर्मचारी को होने वाले किसी फायदे या सुख सुविधा का मूल्य माना जाएगा जिस पर ऐसे किसी नियोजक द्वारा जनता को ऐसा फायदा या सुख सुविधा उपलब्ध कराई जाती है और जिसमें से कर्मचारी द्वारा ऐसे फायदे या सुख सुविधा के लिए संदत्त या उससे वसूल की गई रकम, यदि कोई हो, घटा दी जाएगी :

परंतु इस उपनियम की कोई बात एयरलाइन या रेलवे के कर्मचारियों को लागू नहीं होगी ।

(iv) उपनियम (7) में-

(क) मंद (i) के पश्चात्, निम्नलिखित मर्दे, 1 अप्रैल, 2008 से अंतःस्थापित की गई समझी जाएगी, अर्थात् :—

“(ii) कर्मचारी या उसके घर के किसी सदस्य द्वारा ली गई किसी छुट्टी के लिए नियोजक द्वारा, जो अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर के संदाय का दायी नहीं है, इन नियमों के नियम 2ख में निर्दिष्ट रियायत या सहायता से भिन्न संदाय या वहन या प्रतिपूर्ति किए गए यात्रा, टूरिंग, आवास और किसी अन्य व्ययों का मूल्य नियोजक द्वारा उस निमित्त उपगत की गई व्यय की रकम के बराबर राशि के रूप में अवधारित किया जाएगा । जहां ऐसी सुविधा नियोजक द्वारा दी जाती है और वह सभी कर्मचारियों को समान रूप से उपलब्ध नहीं है, वहां ऐसे फायदे का मूल्य वह मूल्य माना जाएगा, जिस पर ऐसी सुविधाएं अन्य अभिकरणों द्वारा जनता को उपलब्ध कराई जाती हैं । जहां कर्मचारी पदीय दौरे पर है और उसके साथ जा रहे उसके घर के किसी सदस्य की बाबत व्यय उपगत किए गए हैं, वहां इस प्रकार उपगत व्यय की रकम भी मामूली फायदा या सुख सुविधा ही होगी । तथापि, जहां किसी पदीय दौरे का अवकाश के रूप में विस्तार किया जाता है वहां ऐसे मामूली फायदे का मूल्य इस प्रकार रुकने के लिए या अवकाश के लिए बढ़ाई गई अवधि के संबंध में उपगत व्ययों तक सीमित होगा । इस प्रकार अवधारित रकम में से कर्मचारी द्वारा ऐसे फायदे या सुख सुविधा के लिए संदत्त या उससे वसूल की गई कोई रकम यदि कोई हो, घटा दी जाएगी ।

(iii) नियोजक द्वारा, जो अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर का दायी नहीं है, किसी कर्मचारी को उपलब्ध कराए गए निःशुल्क खाद्य और गैर अल्कोहलीय पेय का मूल्य ऐसे नियोजक द्वारा उपगत व्यय की रकम होगी । ऐसी अवधारित रकम में से कर्मचारी द्वारा ऐसे फायदे या सुख सुविधा के लिए संदत्त या उससे वसूल की गई कोई रकम, यदि कोई हो, घटा दी जाएगी :

परंतु इस उपनियम की कोई बात कार्यालय समय के दौरान कार्यालय या कारबार परिसरों में ऐसे नियोजक द्वारा उपलब्ध कराए गए निःशुल्क खाद्य और गैर अल्कोहलीय पेय या ऐसे संदत्त वाउचर जो अंतरणीय नहीं हैं और जो केवल भोजन स्थलों पर ही उपयोग के योग्य हैं, यदि कार्यालय समय के दौरान उपलब्ध कराए गए प्रति भोजन या चाय या नाश्ता, जिसका मूल्य किसी प्रकार 50 रुपए से अधिक नहीं है या दूरस्थ क्षेत्र या अपतट स्थापनों में कार्यालय समय के दौरान उपलब्ध कराए गए निःशुल्क भोजन और गैर अल्कोहलीय पेय को, लागू नहीं होगी ।

(iv) किसी उपहार या ऐसे वाउचर या टोकन का मूल्य जिसके बदले में कर्मचारी या उसके घर के किसी सदस्य द्वारा समारोह के अवसर पर या अन्यथा ऐसा उपहार, किसी नियोजक से, जो अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर के संदाय का दायी नहीं है, प्राप्त किया जा सकता है, ऐसे

उपहार की रकम के बराबर की राशि के रूप में अवधारित किया जाएगा । तथापि, जहां, यथास्थिति, ऐसे उपहार, वाउचर या टोकन का मूल्य पूर्ववर्ष के दीरान कुल 5,000 रुपए से कम है, वहां परिलब्धि का मूल्य शून्य हो जाएगा ।

(v) कर्मचारी या उसके किसी सदस्य द्वारा उपगत सदस्यता फीस और वार्षिक फीस सहित व्ययों की रकम जो नियोजक द्वारा, जो अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर के संदाय का दायी नहीं है, या अन्यथा उपलब्ध कराए गए क्रेडिट कार्ड (किसी एड-आन-कार्ड सहित) पर प्रभारित है और जिसका नियोजक द्वारा संदाय किया गया है या प्रतिपूर्ति की गई है, कर की प्रमासित उपलब्धि के मूल्य के रूप में ली जाएगी । तथापि, उस दशा में, ऐसे फायदे का कोई मूल्य नहीं होगा जिसमें व्यय पूर्णतः या अनन्यतः कार्यालय के प्रयोजनों के लिए उपगत किए जाते हैं, और निम्नलिखित शर्तें पूरी कर दी जाती हैं, अर्थात् :—

(क) ऐसे व्यय की बाबत पूर्ण ब्यौरे, जो नियोजक द्वारा रखे जाते हैं, जिनके अंतर्गत, अन्य बातों के साथ, व्यय की तारीख और व्यय की प्रकृति हो सकेंगी ;

(ख) नियोजक द्वारा यह प्रमाणपत्र दिया जाता है कि ऐसा व्यय पूर्णतः और अनन्यतः पदीय कर्तव्य के पालन के लिए उपगत हुआ था ।

इस प्रकार अवधारित रकम में से ऐसे फायदे या सुख-सुविधा के लिए कर्मचारी द्वारा संदत्त या उससे चसूल की गई रकम, यदि कोई हो, घटा दी जाएगी ।

(vi) (अ) किसी कर्मचारी द्वारा या उसके घर के किसी सदस्य द्वारा किसी क्लब में उपगत किसी व्यय के (जिसके अंतर्गत वार्षिक या सावधिक फीस की रकम भी है) नियोजक द्वारा, जो अधिनियम के अध्याय XIIज के अधीन सीमांत फायदे कर के संदाय का दायी नहीं है, संदाय या प्रतिपूर्ति के परिणामस्वरूप कर्मचारी को होने वाले फायदे का मूल्य उस मद्दे नियोजक द्वारा उपगत या प्रतिपूर्ति किए गए व्यय की वास्तविक रकम के रूप में अवधारित किया जाएगा । इस प्रकार अवधारित रकम में से ऐसे फायदे या सुख-सुविधा के लिए कर्मचारी द्वारा संदत्त या उससे चसूल की गई रकम, यदि कोई हो, घटा दी जाएगी । तथापि, जहां पर कर्मचारी ने क्लब की सामुदायिक सदस्यता अभिप्राप्त कर ली है और उस सुविधा को कर्मचारी या उसके घर का कोई सदस्य भोग रहा है, वहां परिलब्धि के मूल्य में ऐसी सामुदायिक सदस्यता अर्जित करने के लिए संदत्त आरंभिक फीस सम्मिलित नहीं होगी ।

(आ) इस उपनियम में की कोई बात उस दशा में लागू नहीं होगी जिसमें ऐसा व्यय पूर्णतः या अनन्यतः कारबार के प्रयोजन के लिए उपगत किया जाता है और निम्नलिखित शर्तें पूरी कर दी जाती हैं, अर्थात् :—

(क) ऐसे व्यय की बाबत पूर्ण ब्यौरे, जो नियोजक द्वारा रखे जाते हैं, जिनके अंतर्गत, अन्य बातों के साथ, व्यय की तारीख, व्यय की प्रकृति और कारबार की समीक्षीनता भी हो सकेंगी ;

(ख) नियोजक द्वारा यह प्रमाणपत्र दिया जाता है कि ऐसा व्यय पूर्णतः या अनन्यतः पदीय कर्तव्य के पालन के लिए उपगत हुआ था ;

(ग) इस उपनियम में की कोई बात नियोजक द्वारा सभी कर्मचारियों को समान रूप से उपलब्ध कराए गए स्वास्थ्य क्लब, स्पोर्ट्स और वैसी ही सुविधाओं के उपयोग के लिए लागू नहीं होगी ।

(ख) मद (viii) के पश्चात्, निम्नलिखित मद, 1 अप्रैल, 2008 से अंतःस्थापित की गई समझी जाएगी, अर्थात् :—

“(ix) नियोजक द्वारा उपलब्ध कराए गए किसी अन्य फायदे या सुख-सुविधा, सेवा, अधिकार या विशेषाधिकार का मूल्य असन्निकट संव्यवहार के अधीन नियोजक की लागत के आधार पर अवधारित किया जाएगा और उसमें से कर्मचारी का अभिदान, यदि कोई हो, घटा दिया जाएगा ।

परंतु इस मद की कोई बात नियोजक द्वारा कर्मचारी की ओर से वास्तविक रूप से उपगत मोबाइल फोन सहित टेलीफोनों पर व्ययों को लागू नहीं होगी ।

[सं. 271/2007/फा. सं. 142/15/2007-टीपीएल]

शोभन कर, अवर सचिव

टिप्पणि—मूल नियम, अधिसूचना सं. का.आ. 969(अ), तारीख 26 मार्च, 1962 द्वारा प्रकाशित किए गए थे और अंतिम संशोधन, आयनकर (बारहवां संशोधन) नियम, 2007, अधिसूचना सं. का.आ. 1805(अ), तारीख 23-10-2007 द्वारा किए गए ।

स्पष्टीकारक ज्ञापन

वित्त अधिनियम, 2007 ने, किराए के विषय में रियायत परिभाषित करने के लिए धारणा उपबंध को अंतःस्थापित किया है । उसने, 1 अप्रैल, 2006 से, भूतलक्षी प्रभाव से अर्थात् निर्धारण वर्ष 2006-2007 से, रियायती किराया वास सुविधां और पट्टाधृत वास सुविधा की प्रकृति में परिवर्त्ति के मूल्याकन की दर को कम भी किया है । यह आवश्यक हो गया है कि नियम 3 की सारणी I में, किराया मुक्त और रियायती दर पर वास सुविधा तथा पट्टाधृत सुविधा, दोनों दशाओं में, 1 अप्रैल, 2006 से, भूतलक्षी प्रभाव से अर्थात् निर्धारण वर्ष 2006-2007 और पश्चात्वर्ती वर्षों के संबंध में, दरों में समान कमी की जाए । यह प्रमाणित किया जाता है कि भूतलक्षी प्रभाव का निर्धारितियों के हित पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं होगा ।

यह और कि वित्त अधिनियम, 2005 में, 1 अप्रैल, 2006 से अर्थात् निर्धारण वर्ष 2006-07 और पश्चात्वर्ती वर्षों के लिए लागू नियोजक पर सीमान्त फायदे कर के उद्ग्रहण से संबंधित, अधिनियम में एक नया अध्याय XII-ज, अंतःस्थापित किया था । तदनुसार, नियम 3 का, कतिपय मदों पर दोहरे कराधान से बचने के लिए अधिसूचना संख्यांक का 0आ0 265(अ), तारीख 28 फरवरी, 2005 द्वारा संशोधन किया गया था ।

चूंकि वित्त विधेयक, 2005 में यथा उपबंधित सीमान्त फायदे कर से संबंधित अध्याय XII- ज, किसी नियोजक को, धारा 10 के खंड (23ग) के अधीन छूट के लिए पात्र कोई व्यष्टि या कोई हिंदू अविभक्त परिवार या कोई नियम या न्यास या संस्था होने के कारण, लागू नहीं होता है, संशोधित किए जाने के लिए अपेक्षित है जिससे ऐसे नियोजक द्वारा उसके कर्मचारियों को प्रदत्त फायदों की दशा में परिवर्त्ति का मूल्याकन सम्मिलित किया जा सके । तदनुसार उपनियम 2, 6, 7(ii), (iii), (iv), (v) और (vi), ऐसे मूल्याकन के लिए उपबंध करने को अंतःस्थापित किए जा चुके हैं । उपनियम 7(ix), किसी नियोजक से संबंधित अवशिष्ट दशाओं में किसी अन्य फायदे या सुख-सुविधा के मूल्याकन के लिए उपबंध करने को अंतःस्थापित किया गया है । ये उपनियम, 1 अप्रैल, 2008 से प्रभावी होंगे और तदनुसार निर्धारण वर्ष 2008-2009 तथा पश्चात्वर्ती वर्षों के संबंध में लागू होंगे ।

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue)
(CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th November, 2007

INCOME-TAX

S.O. 1896(E).—In exercise of the powers conferred by section 295 read with sub-section (2) of section 17 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Income-tax Rules, 1962, namely:—

1. These rules may be called the Income-tax (Fourteenth Amendment) Rules, 2007.
2. In the Income-tax Rules, 1962, in rule 3,—
 - (i) in sub-rule (1), for Table I, the following Table shall be substituted and shall be deemed to have been substituted with effect from the 1st day of April, 2006, namely:—

“TABLE I

Sl No.	Circumstances	Where accommodation is unfurnished	Where accommodation is furnished
(1)	(2)	(3)	(4)
(1)	Where the accommodation is provided by the Central Government or any State Government to the employees either holding office or post in connection with the affairs of the Union or of such State or serving with any body or undertaking under the control of such Government on deputation.	License fee determined by the Central Government or any State Government in respect of accommodation in accordance with the rules framed by such Government as reduced by the rent actually paid by the employee.	The value of perquisite as determined under column (3) and increased by 10% per annum of the cost of furniture (including television sets, radio sets, refrigerators, other household appliances, air-conditioning plant or equipment) or if such furniture is hired from a third party, the actual hire charges payable for the same as reduced by any charges paid or payable for the same by the employee during the previous year.
(2)	Where the accommodation is provided by any other employer and— (a) where accommodation owned by the employer, or	(i) 15% of salary in cities having population exceeding 25 lakhs as per 2001 census; (ii) 10% of salary in cities having population exceeding 10 lakhs but not exceeding 25 lakhs as per 2001 census; (iii) 7.5% of salary in other areas, in respect of the period during which the said	The value of perquisite as determined under column (3) and increased by 10% per annum of the cost of furniture (including television sets, radio sets, refrigerators, other household appliances, air-conditioning plant or equipment or other similar appliances or gadgets) or if such furniture is hired from a third party, by the actual hire charges payable for the same as reduced by any charges paid or payable

		accommodation was occupied by the employee during the previous year as reduced by the rent, if any, actually paid by the employee.	for the same by the employee during the previous year.
	(b) where the accommodation is taken on lease or rent by the employer.	Actual amount of lease rental paid or payable by the employer or 15% of salary whichever is lower as reduced by the rent, if any, actually paid by the employee.	The value of perquisite as determined under column (3) and increased by 10% per annum of the cost of furniture (including television sets, radio sets, refrigerators, other household appliances, air-conditioning plant or equipment or other similar appliances or gadgets) or if such furniture is hired from a third party, by the actual hire charges payable for the same as reduced by any charges paid or payable for the same by the employee during the previous year.
(3)	Where the accommodation is provided by the employer specified in serial number (1) or (2) in a hotel (except where the employee is provided such accommodation for a period not exceeding in aggregate fifteen days on his transfer from one place to another)	Not applicable	24% of salary paid or payable for the previous year or the actual charges paid or payable to such hotel, which is lower, for the period during which such accommodation is provided as reduced by the rent, if any, actually paid or payable by the employee.

"

(ii) after sub-rule (1), the following sub-rule shall be inserted and shall be deemed to have been inserted with effect from 1st April, 2008, namely:-

"(2) (A) The value of perquisite provided by way of use of motor car to an employee by an employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XII-H of the Act, shall be determined in accordance with the following Table, namely:-

TABLE II
VALUE OF PERQUISITE PER CALENDAR MONTH

Sl. No.	Circumstances	Where cubic capacity of engine does not exceed 1.6 litres	Where cubic capacity of engine exceeds 1.6 litres
(1)	(2)	(3)	(4)
(1)	Where the motor car is owned or hired by the employer and— (a) is used wholly and exclusively in the	No value: Provided that the documents	No value: Provided that the documents

	<p>performance of his official duties;</p> <p>(b) is used exclusively for the private or personal purposes of the employee or any member of his household and the running and maintenance expenses are met or reimbursed by the employer;</p> <p>(c) is used partly in the performance of duties and partly for private or personal purposes of his own or any member of his household and</p> <p>(i) the expenses on maintenance and running are met or reimbursed by the employer,</p> <p>(ii) the expenses on running and maintenance for such private or personal use are fully met by the assessee.</p>	<p>specified in clause (B) of this sub-rule are maintained by the employer.</p> <p>Actual amount of expenditure incurred by the employer on the running and maintenance of motor car during the relevant previous year including remuneration, if any, paid by the employer to the chauffeur as increased by the amount representing normal wear and tear of the motor car and as reduced by any amount charged from the employee for such use.</p> <p>Rs. 1,200 (plus Rs. 600, if chauffeur is also provided to run the motor car)</p> <p>Rs. 400 (plus Rs. 600, if chauffeur is provided by the employer to run the motor car)</p>	<p>specified in clause (B) of this sub-rule are maintained by the employer.</p> <p>Actual amount of expenditure incurred by the employer on the running and maintenance of motor car during the relevant previous year including remuneration, if any, paid by the employer to the chauffeur as increased by the amount representing normal wear and tear of the motor car and as reduced by any amount charged from the employee for such use.</p> <p>Rs. 1,600 (plus Rs. 600, if chauffeur is also provided to run the motor car)</p> <p>Rs. 600 (plus Rs. 600, if chauffeur is also provided to run the motor car)</p>
(2)	<p>Where the employee owns a motor car but the actual running and maintenance charges (including remuneration of the chauffeur, if any) are met or reimbursed to him by the employer and</p> <p>(i) such re-imbursement is for the use of the vehicle wholly and exclusively for official purposes,</p>	<p>No value:</p> <p>Provided that the documents specified in clause (B) of this sub-rule are maintained by the employer.</p>	<p>No value:</p> <p>Provided that the documents specified in clause (B) of this sub-rule are maintained by the employer.</p>

	<p>(ii) such re-imbursement is for the use of the vehicle partly for official purposes and partly for personal or private purposes of the employee or any member of his household.</p> <p>(3) Where the employee owns any other automotive conveyance but the actual running and maintenance charges are met or reimbursed to him by the employer and</p> <p>(i) such re-imbursement is for the use of the vehicle wholly and exclusively for official purposes,</p> <p>(ii) such re-imbursement is for the use of the vehicle partly for official purposes and partly for personal or private purposes of the employee.</p>	<p>Subject to the provisions of clause (B) of this sub-rule, the actual amount of expenditure incurred by the employer as reduced by the amount specified in Sl. No. (1)(c)(i) above.</p>	<p>Subject to the provisions contained in clause (B) of this sub-rule, the actual amount of expenditure incurred by the employer as reduced by the amount specified in Sl. No. (1)(c)(i) above.</p>
		<p>No value: Provided that the documents specified in clause (B) of this sub-rule are maintained by the employer.</p> <p>Subject to the provisions of clause (B) of this sub-rule, the actual amount of expenditure incurred by the employer as reduced by an amount of Rs. 600:</p>	Not applicable

Provided that where one or more motor-cars are owned or hired by the employer and the employee or any member of his household are allowed the use of such motor-car or all or any of such motor-cars (otherwise than wholly and exclusively in the performance of his duties), the value of perquisite shall be the amount calculated in respect of one car in accordance with Sl. No. (1)(c)(i) of Table II as if the employee had been provided one motor-car for use partly in the performance of his duties and partly for his private or personal purposes and the amount calculated in respect of the other car or cars in accordance with Sl. No. (1)(b) of Table II as if he had been provided with such car or cars exclusively for his private or personal purposes.

(B) Where the employer or the employee claims that the motor-car is used wholly and exclusively in the performance of official duty or that the actual expenses on the running and maintenance of the motor-car owned by the employee for official purposes is more than the amounts deductible in Sl. Nos. 2(ii) or 3(ii) of Table II, he may claim a higher amount attributable to such official use and the value of perquisite in such a case shall be the actual amount of charges met or reimbursed by the employer as reduced by such higher amount attributable to official use of the vehicle provided that the following conditions are fulfilled:—

- (a) the employer has maintained complete details of journey undertaken for official purpose which may include date of journey, destination, mileage, and the amount of expenditure incurred thereon;
- (b) the employer gives a certificate to the effect that the expenditure was incurred wholly and exclusively for the performance of official duties.

Explanation.—For the purposes of this sub-rule, the normal wear and tear of a motor-car shall be taken at 10% per annum of the actual cost of the motor-car or cars.”

(iii) after sub-rule (5), the following sub-rule shall be inserted with effect from 1st April, 2008, namely:-

“(6) The value of any benefit or amenity resulting from the provision by an employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XIIH of the Income-tax Act and is engaged in the carriage of passengers or goods to any employee or to any member of his household for personal or private journey free of cost or at concessional fare, in any conveyance owned, leased or made available by any other arrangement by such employer for the purpose of transport of passengers or goods shall be taken to be the value at which such benefit or amenity is offered by such employer to the public as reduced by the amount, if any, paid by or recovered from the employee for such benefit or amenity:

Provided that nothing contained in this sub-rule shall apply to the employees of an airline or the railways”

(iv) in sub-rule (7),-

(a) after item (i), the following items shall be inserted with effect from 1st April, 2008, namely:-

“(ii) The value of traveling, touring, accommodation and any other expenses paid for or borne or reimbursed by the employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XII-H of the Act, for any holiday availed of by the employee or any member of his household, other than concession or assistance referred to in rule 2B of these rules, shall be determined as the sum equal to the amount of the expenditure incurred by such employer in that behalf. Where such facility is maintained by the employer, and is not available uniformly to all employees, the value of benefit shall be taken to be the value at which such facilities are offered by other agencies to the public. Where the employee is on official tour and the expenses are incurred in respect of any member of his household accompanying him, the amount of expenditure so incurred shall also be a fringe benefit or amenity. However, where any official tour is extended as a vacation, the value of such fringe benefit shall be limited to the expenses incurred in relation to such extended period of stay or vacation. The amount so determined shall be reduced by the amount, if any, paid or recovered from the employee for such benefit or amenity.

(iii) The value of free food and non alcoholic beverages provided by the employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XIIH of the Act, to an employee shall be the amount of expenditure incurred by such employer. The amount so determined shall be reduced by the amount, if any, paid or recovered from the employee for such benefit or amenity:

Provided that nothing contained in this sub-rule shall apply to free food and non-alcoholic beverages provided by such employer during working hours at office or business premises or through paid vouchers which are not transferable and usable only at eating joints, to the extent the value thereof in either case does not exceed Rs. 50 per meal or to tea or snacks provided during working

hours or to free food and non-alcoholic beverages during working hours provided in a remote area or an off-shore installation.

(iv) The value of any gift, or voucher, or token in lieu of which such gift may be received by the employee or by member of his household on ceremonial occasions or otherwise from the employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XII-H of the Act, shall be determined as the sum equal to the amount of such gift. However, where the value of such gift, voucher or token, as the case may be, is below Rs. 5,000 in the aggregate during the previous year, the value of perquisite shall be taken as 'nil'.

(v) The amount of expenses including membership fees and annual fees incurred by the employee or any member of his household, which is charged to a credit card (including any add-on-card), provided by the employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XII-H of the Act, or otherwise, paid for or reimbursed by such employer shall be taken to be the value of perquisite chargeable to tax. However, there shall be no value of such benefit where the expenses are incurred wholly and exclusively for official purposes and the following conditions are fulfilled—

- (a) complete details in respect of such expenditure are maintained by the employer which may, *inter alia*, include the date of expenditure and the nature of expenditure;
- (b) the employer gives a certificate for such expenditure to the effect that the same was incurred wholly and exclusively for the performance of official duties.

The amount so determined shall be reduced by the amount, if any paid or recovered from the employee for such benefit or amenity.

(vi) (A) The value of benefit to the employee resulting from the payment or reimbursement by the employer, who is not liable to pay fringe benefit tax under Chapter XII-H of the Act, of any expenditure incurred (including the amount of annual or periodical fee) in a club by him or by any member of his household shall be determined to be the actual amount of expenditure incurred or reimbursed by such employer on that account. The amount so determined shall be reduced by the amount, if any paid or recovered from the employee for such benefit or amenity. However, where the employer has obtained corporate membership of the club and the facility is enjoyed by the employee or any member of his household, the value of perquisite shall not include the initial fee paid for acquiring such corporate membership.

(B) Nothing contained in this sub-rule shall apply if such expenditure is incurred wholly and exclusively for business purposes and the following conditions are fulfilled:—

- (a) complete details in respect of such expenditure are maintained by the employer which may, *inter alia*, include the date of expenditure, the nature of expenditure and its business expediency;
- (b) the employer gives a certificate for such expenditure to the effect that the same was incurred wholly and exclusively for the performance of official duties;
- (c) Nothing contained in this sub-rule shall apply for use of health club, sports and similar facilities provide uniformly to all employees by the employer.”

(b) after item (viii), the following item shall be inserted with effect from 1st day of April, 2008, namely:—

“(ix) The value of any other benefit or amenity, service, right or privilege provided by the employer shall be determined on the basis of cost to the employer under an arm's length transaction as reduced by the employee's contribution, if any:

Provided that nothing contained in this item shall apply to the expenses on telephones including a mobile phone actually incurred on behalf of the employee by the employer."

[No. 271/2007/F. No. 142/15/2007-TPL]

SOBHAN KAR, Under Secy.

Note.—The principal rules were published *vide* notification No. S.O. 969(E), dated the 26th March, 1962 and last amended by Income-tax (12th Amendment) Rules, 2007 *vide* notification No. S.O. 1805(E), dated 23-10-2007.

EXPLANATORY MEMORANDUM

The Finance Act, 2007 has inserted a deeming provision to define concession in the matter of rent. It has also reduced the rate of valuation of perquisite in the nature of concessional rent accommodation and leased accommodation with retrospective effect from 1st day of April, 2006, that is with effect from assessment year 2006-2007. This has necessitated similar reduction of rates in case of both rent free and concessional rent accommodations and leased accommodation in Table I of rule 3 with retrospective effect from 1st day of April, 2006, that is in relation to assessment year 2006-2007 and subsequent years. It is certified that the retrospective effect shall not prejudicially affect the interest of the assessees.

Further, the Finance Act, 2005 had inserted a new Chapter XII-H in the Act, relating to levy of fringe benefit tax on the employer with effect from 1st April 2006, i.e. applicable for assessment year 2006-07 and subsequent years. Accordingly, rule 3 was amended *vide* notification number S.O. 265(E) dated the 28th February, 2005, to avoid double taxation on certain items.

Since, Chapter XII-H relating to Fringe Benefit Tax, as provided in the Finance Act, 2005, is not applicable to the employer, being an individual or a Hindu undivided family or any fund or trust or institution eligible for exemption under clause (23C) of section 10 or registered under section 12AA, rule 3 is required to be amended so as to include valuation of perquisite in case of benefits provided by such employers to its employees. Accordingly, sub-rules 2, 6, 7 (ii), (iii), (iv), (v) and (vi) have been inserted to provide for such valuation. Sub-rule 7(ix) has been inserted to provide for valuation of any other benefit or amenity, etc. in residual cases relating to any employer. These sub-rules will take effect from the 1st April, 2008 and will, accordingly, apply in relation to the assessment year 2008-2009 and subsequent years.